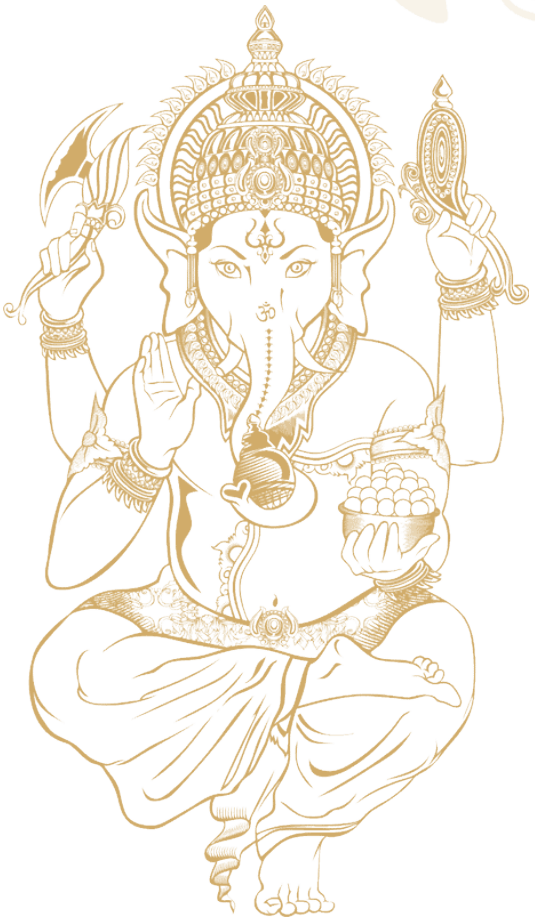

Ojal Ganesh Dalvi

03 Dec 2022

11:55 AM

Thana

Model: All-Dosha-Report **Order No: 121284701**

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**03/12/2022**
दिवस	शनिवार
जन्म समय	**11:55:00 कला**
इष्ट	12:26:07 घटी
स्थान	**Thana**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	19:14:00 उत्तर
रेखांश	73:02:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:37:52 कला
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 कला
स्थानिक वेल	11:17:08 कला
वेलान्तर	00:10:17 कला
साम्पातिक वेल	16:05:25 कला
सूर्योदय	06:56:33 कला
सूर्यास्त	17:58:50 कला
दिनमान	11:02:18 कला
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	हेमन्त
सूर्याचे अंश	16:52:51 वृश्चिक
लग्नाचे अंश	00:05:35 कुम्भ

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	कुम्भ – शनि
राशि–स्वामी	**मीन – गुरु**
नक्षत्र–चरण	**रेवती – 2**
नक्षत्र स्वामी	बुध
योग	व्यतिपात
करण	वणिज
गण	देव
योनि	गज
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सर्प
युँजा	पूर्व
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	दो–द्रोणी
पाया(राशि–नक्षत्र)	रजत – स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	धनु

पंचांग

आजोबांचें नांव _____:
बडीलांचे नांव _____:
आईचें नांव _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	माह	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1944	मार्गशीर्ष	12
पंजाबी	संवत : 2079	मार्गशीर्ष	18
बंगाली	सन् : 1429	मार्गशीर्ष	17
तमिल	संवत : 2079	काभतगाई	17
केरल	कोल्लम : 1198	वृश्चिकम	17
नेपाली	संवत : 2079	मार्गशीर्ष	18
चैत्रादी	संवत : 2079	मार्गशीर्ष	शुक्ल 11
कार्तिकादी	संवत : 2079	मार्गशीर्ष	शुक्ल 11

पंचांग

सूर्योदय समयी तिथि _____: 11
तिथि समाप्ति वेल _____: 29:34:39
जन्म तिथि _____: 11
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____: रेवती
नक्षत्र समाप्ति वेल _____: 30:16:12 कला
जन्म योग _____: रेवती
सूर्योदय समयी योग _____: व्यतिपात
योग समाप्ति वेल _____: 28:34:04 कला
जन्म योग _____: व्यतिपात
सूर्योदय समयी करण _____: वणिज
करण समाप्ति वेल _____: 17:33:30 कला
जन्म करण _____: वणिज
भयात _____: 15:24:35
भभोग _____: 61:17:34
भोग्य दशा वेल _____: बुध 12 वर्ष 8 मा 10 दि

घात चक्र

मास _____: फाल्गुन
तिथि _____: 5-10-15
दिवस _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: आश्लेषा
योग _____: वज्र
करण _____: चतुष्पाद
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: गरूड़
लग्न _____: सिंह
रवि _____: मिथुन
चन्द्र _____: कुम्भ
मंगळ _____: कर्क
बुध _____: कुम्भ
गुरु _____: सिंह
शुक्र _____: कन्या
शनि _____: वृषभ
राहु _____: तुला

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

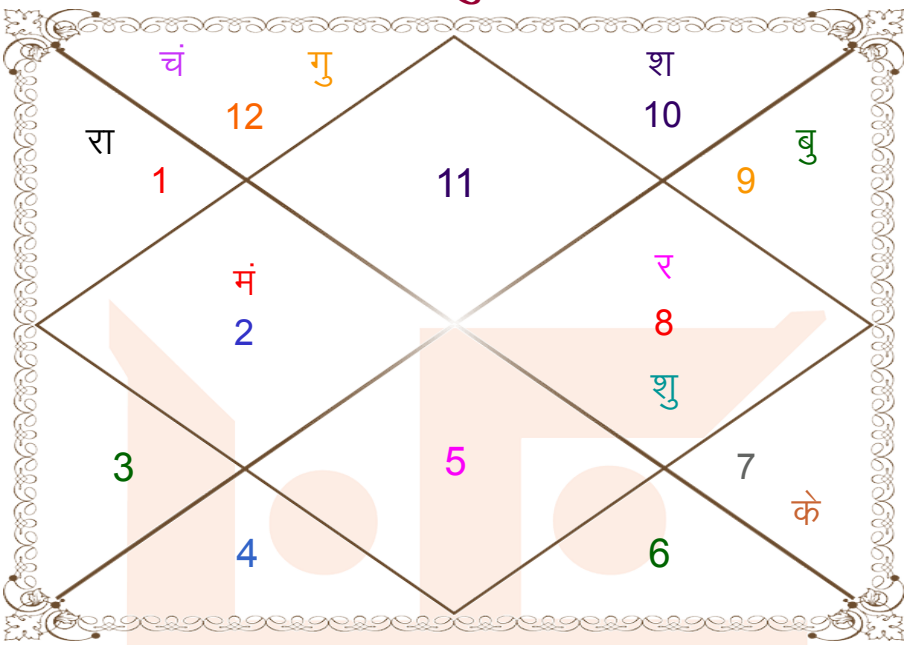

चन्द्र कुंडली

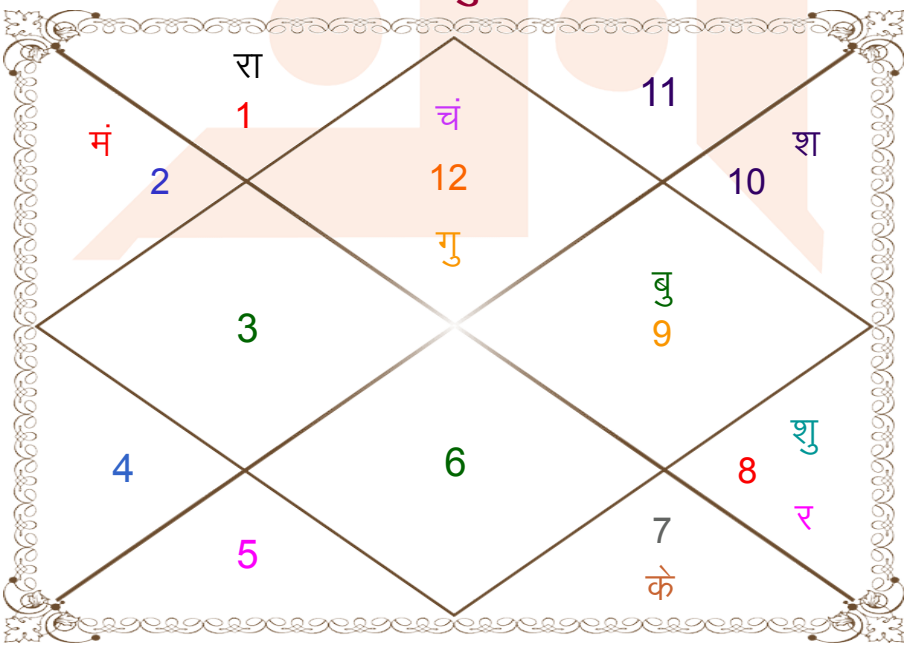

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

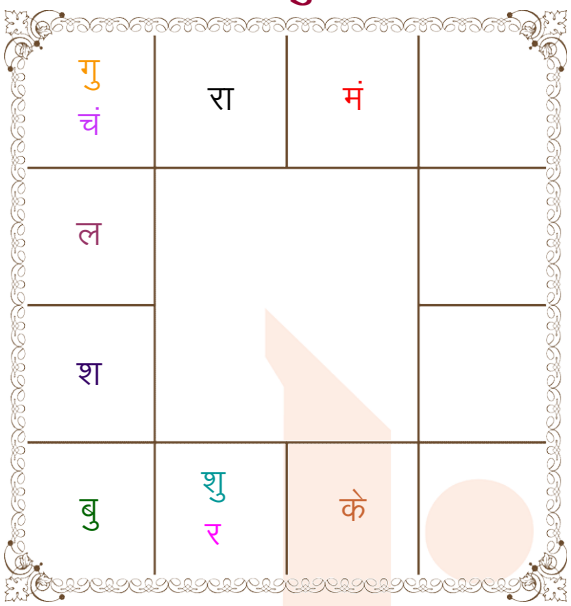

लग्न कुंडली

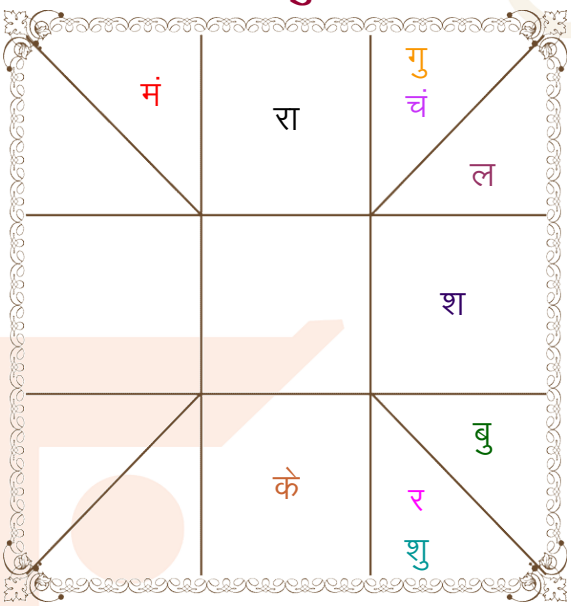

विंशोत्तरी

बुध 12वर्ष 8मा 10दि

बुध

03/12/2022

15/08/2138

बुध	14/08/2035
केतु	14/08/2042
शुक्र	14/08/2062
रवि	13/08/2068
चन्द्र	14/08/2078
मंगळ	13/08/2085
राहु	15/08/2103
गुरु	15/08/2119
शनि	15/08/2138

योगिनी

उल्का 4वर्ष 5मा 23दि

उल्का

03/12/2022

28/05/2027

	03/12/2022
सिद्धा	27/07/2023
संकटा	25/11/2024
मंगळा	25/01/2025
पिंगला	27/05/2025
धान्या	26/11/2025
भ्रामरी	27/07/2026
भद्रिका	28/05/2027

ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कुंभ	00:05:35	426:36:09	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगळ	बुध	----
सूर्य			वृश्चि	16:52:51	01:00:50	ज्येष्ठा	1	18	मंगळ	बुध	बुध	मित्र राशि
चंद्र			मीन	20:02:36	13:06:52	रेवती	2	27	गुरु	बुध	शुक्र	सम राशि
मंगळ	व		वृष	23:50:18	00:23:01	मृगशिरा	1	5	शुक्र	मंगळ	मंगळ	सम राशि
बुध			धनु	00:19:26	01:30:54	मूल	1	19	गुरु	केतु	केतु	सम राशि
गुरु			मीन	04:46:30	00:01:56	उ.भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	स्वगृही
शुक्र			वृश्चि	27:10:31	01:15:17	ज्येष्ठा	4	18	मंगळ	बुध	गुरु	सम राशि
शनि			मक	25:49:27	00:03:59	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगळ	राहु	स्वगृही
राहु			मेष	19:02:01	00:01:42	भरणी	2	2	मंगळ	शुक्र	राहु	शत्रु राशि
केतु			तुला	19:02:01	00:01:42	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	चंद्र	सम राशि
हर्ष	व		मेष	21:47:10	00:02:11	भरणी	3	2	मंगळ	शुक्र	गुरु	----
नेप	व		कुंभ	28:28:16	00:00:02	पू.भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	----
प्लूटो			मक	02:39:46	00:01:29	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	गुरु	----
दशम भाव			वृश्चि	09:12:16	--	अनुराधा	--	17	मंगळ	शनि	शुक्र	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
लाहिरी अयनांश : 24:10:26

लग्न–चलित

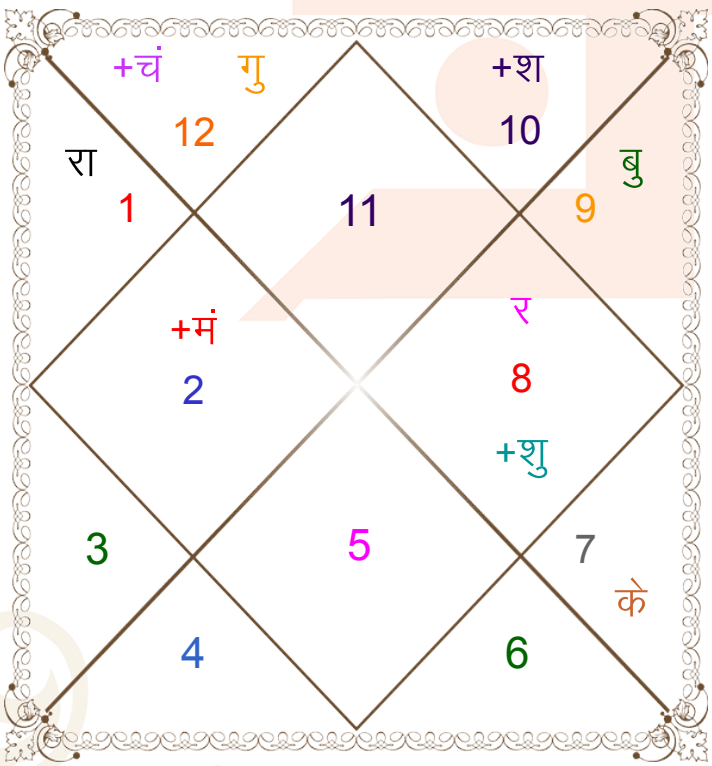

चन्द्र कुंडली

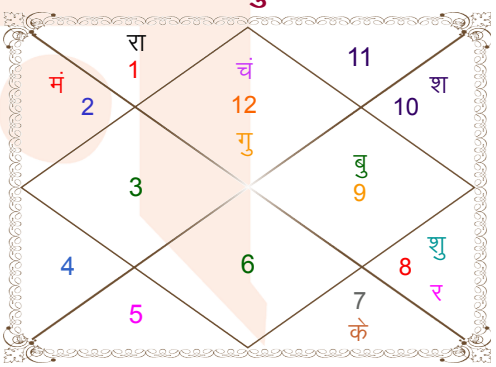

नवमांश कुंडली

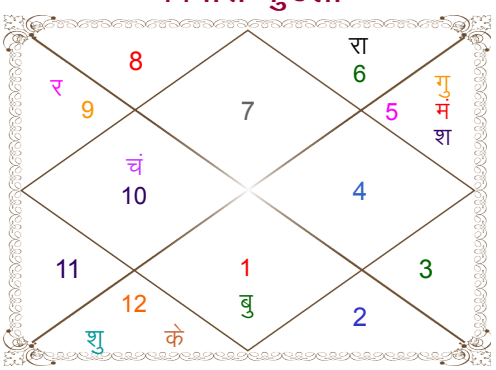

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मकर	16:36:42	कुम्भ	00:05:35
2	कुम्भ	16:36:42	मीन	03:07:49
3	मीन	19:38:56	मेष	06:10:02
4	मेष	22:41:09	वृषभ	09:12:16
5	वृषभ	22:41:09	मिथुन	06:10:02
6	मिथुन	19:38:56	कर्क	03:07:49
7	कर्क	16:36:42	सिंह	00:05:35
8	सिंह	16:36:42	कन्या	03:07:49
9	कन्या	19:38:56	तुला	06:10:02
10	तुला	22:41:09	वृश्चिक	09:12:16
11	वृश्चिक	22:41:09	धनु	06:10:02
12	धनु	19:38:56	मकर	03:07:49

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कुम्भ	00:05:35
2	मीन	07:27:49
3	मेष	11:02:19
4	वृषभ	09:12:16
5	मिथुन	04:24:23
6	कर्क	00:04:32
7	सिंह	00:05:35
8	कन्या	07:27:49
9	तुला	11:02:19
10	वृश्चिक	09:12:16
11	धनु	04:24:23
12	मकर	00:04:32

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद

चलित कुंडली

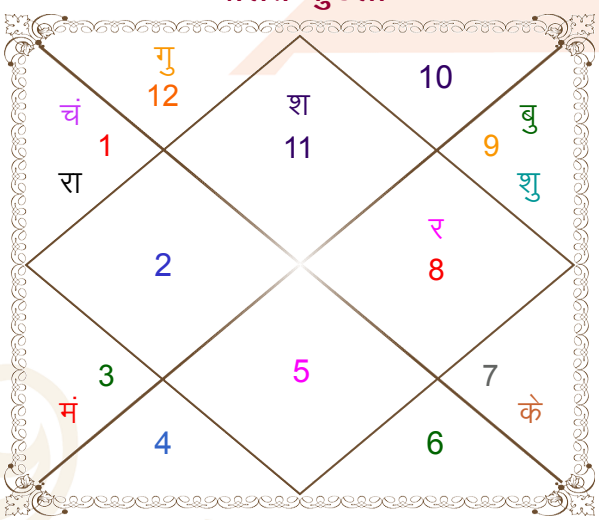

भाव कुंडली

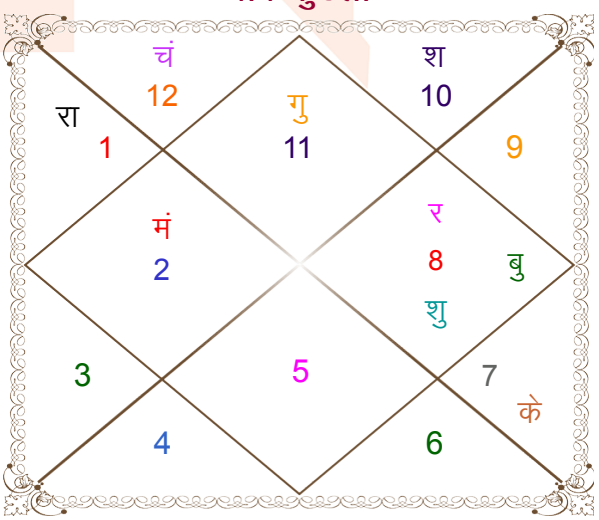

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	——— कारक ———		——— अवस्था ———				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	पुत्र	पितृ	युवा	मुदित	उपवेशन	2.05	48 %
चंद्र	मातृ	मातृ	कुमार	शान्त	आगम	3.43	72 %
मंगळ	भ्रातृ	भ्रातृ	कुमार	शक्त	उपवेशन	0.89	60 %
बुध	कलत्र	ज्ञाति	बाल	निपीदित	आगमन	3.49	49 %
गुरु	ज्ञाति	धन	मृत	स्वस्थ	नृत्यलिप्सा	3.49	80 %
शुक्र	आत्मा	कलत्र	बाल	निपीदित	उपवेशन	1.34	57 %
शनि	अमात्य	आयुष्य	बाल	स्वस्थ	आगमन	3.51	24 %
राहु	———	ज्ञान	वृद्ध	खल	उपवेशन	0.00	22 %
केतु	———	मोक्ष	वृद्ध	शान्त	आगम	0.00	22 %
एकुण						**18.19**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद

चलित कुंडली

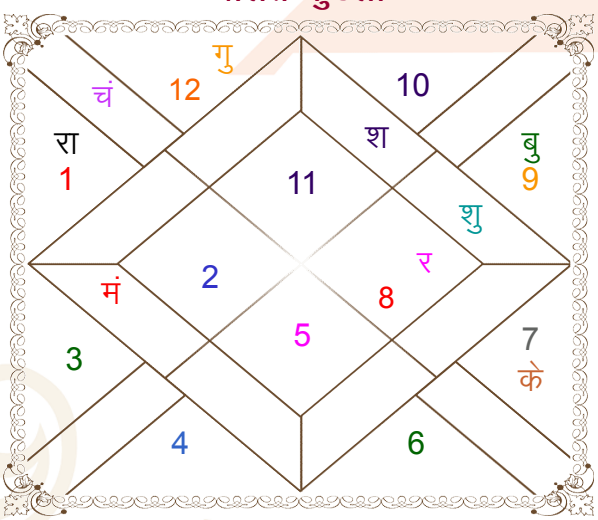

लग्न–चलित

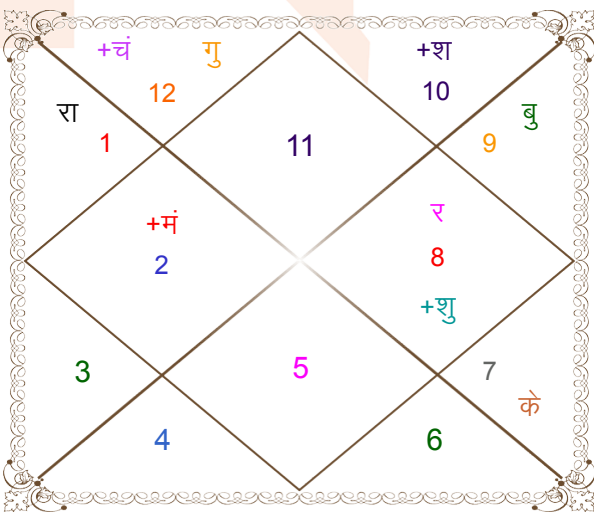

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा वेल : बुध 12 वर्ष 8 महिना 10 दिवस

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
03/12/2022		14/08/2035		14/08/2042		14/08/2062		13/08/2068	
14/08/2035		14/08/2042		14/08/2062		13/08/2068		14/08/2078	
	00/00/0000	केतु	10/01/2036	शुक्र	13/12/2045	सूर्य	01/12/2062	चंद्र	13/06/2069
	03/12/2022	शुक्र	11/03/2037	सूर्य	13/12/2046	चंद्र	02/06/2063	मंगळ	12/01/2070
शुक्र	06/11/2024	सूर्य	17/07/2037	चंद्र	13/08/2048	मंगळ	08/10/2063	राहु	14/07/2071
सूर्य	13/09/2025	चंद्र	15/02/2038	मंगळ	13/10/2049	राहु	31/08/2064	गुरु	12/11/2072
चंद्र	12/02/2027	मंगळ	14/07/2038	राहु	13/10/2052	गुरु	19/06/2065	शनि	14/06/2074
मंगळ	09/02/2028	राहु	02/08/2039	गुरु	14/06/2055	शनि	01/06/2066	बुध	13/11/2075
राहु	29/08/2030	गुरु	07/07/2040	शनि	14/08/2058	बुध	08/04/2067	केतु	13/06/2076
गुरु	04/12/2032	शनि	16/08/2041	बुध	13/06/2061	केतु	14/08/2067	शुक्र	12/02/2078
शनि	14/08/2035	बुध	14/08/2042	केतु	14/08/2062	शुक्र	13/08/2068	सूर्य	14/08/2078

मंगळ 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
14/08/2078		13/08/2085		15/08/2103		15/08/2119		15/08/2138	
13/08/2085		15/08/2103		15/08/2119		15/08/2138		00/00/0000	
मंगळ	10/01/2079	राहु	25/04/2088	गुरु	02/10/2105	शनि	18/08/2122	बुध	10/01/2141
राहु	28/01/2080	गुरु	19/09/2090	शनि	14/04/2108	बुध	27/04/2125	केतु	07/01/2142
गुरु	03/01/2081	शनि	26/07/2093	बुध	21/07/2110	केतु	06/06/2126	शुक्र	04/12/2142
शनि	12/02/2082	बुध	12/02/2096	केतु	27/06/2111	शुक्र	05/08/2129		00/00/0000
बुध	09/02/2083	केतु	02/03/2097	शुक्र	25/02/2114	सूर्य	18/07/2130		00/00/0000
केतु	08/07/2083	शुक्र	03/03/2100	सूर्य	14/12/2114	चंद्र	16/02/2132		00/00/0000
शुक्र	06/09/2084	सूर्य	25/01/2101	चंद्र	14/04/2116	मंगळ	27/03/2133		00/00/0000
सूर्य	12/01/2085	चंद्र	27/07/2102	मंगळ	21/03/2117	राहु	01/02/2136		00/00/0000
चंद्र	13/08/2085	मंगळ	15/08/2103	राहु	15/08/2119	गुरु	15/08/2138		00/00/0000

- वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल बुध 12 वर्ष 8 मा 21 दि होता आहेत.
- वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - चंद्र		बुध - मंगळ		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
13/09/2025		12/02/2027		09/02/2028		29/08/2030		04/12/2032	
12/02/2027		09/02/2028		29/08/2030		04/12/2032		14/08/2035	
चंद्र	26/10/2025	मंगळ	05/03/2027	राहु	28/06/2028	गुरु	17/12/2030	शनि	08/05/2033
मंगळ	25/11/2025	राहु	29/04/2027	गुरु	30/10/2028	शनि	27/04/2031	बुध	25/09/2033
राहु	11/02/2026	गुरु	16/06/2027	शनि	27/03/2029	बुध	22/08/2031	केतु	21/11/2033
गुरु	21/04/2026	शनि	12/08/2027	बुध	06/08/2029	केतु	10/10/2031	शुक्र	04/05/2034
शनि	12/07/2026	बुध	03/10/2027	केतु	29/09/2029	शुक्र	25/02/2032	सूर्य	22/06/2034
बुध	23/09/2026	केतु	24/10/2027	शुक्र	03/03/2030	सूर्य	06/04/2032	चंद्र	12/09/2034
केतु	23/10/2026	शुक्र	23/12/2027	सूर्य	19/04/2030	चंद्र	14/06/2032	मंगळ	08/11/2034
शुक्र	17/01/2027	सूर्य	10/01/2028	चंद्र	05/07/2030	मंगळ	01/08/2032	राहु	05/04/2035
सूर्य	12/02/2027	चंद्र	09/02/2028	मंगळ	29/08/2030	राहु	04/12/2032	गुरु	14/08/2035

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगळ	
14/08/2035		10/01/2036		11/03/2037		17/07/2037		15/02/2038	
10/01/2036		11/03/2037		17/07/2037		15/02/2038		14/07/2038	
केतु	22/08/2035	शुक्र	21/03/2036	सूर्य	17/03/2037	चंद्र	04/08/2037	मंगळ	24/02/2038
शुक्र	16/09/2035	सूर्य	11/04/2036	चंद्र	28/03/2037	मंगळ	16/08/2037	राहु	18/03/2038
सूर्य	24/09/2035	चंद्र	17/05/2036	मंगळ	05/04/2037	राहु	17/09/2037	गुरु	07/04/2038
चंद्र	06/10/2035	मंगळ	11/06/2036	राहु	24/04/2037	गुरु	15/10/2037	शनि	01/05/2038
मंगळ	15/10/2035	राहु	14/08/2036	गुरु	11/05/2037	शनि	18/11/2037	बुध	22/05/2038
राहु	06/11/2035	गुरु	09/10/2036	शनि	31/05/2037	बुध	18/12/2037	केतु	30/05/2038
गुरु	26/11/2035	शनि	16/12/2036	बुध	18/06/2037	केतु	31/12/2037	शुक्र	24/06/2038
शनि	20/12/2035	बुध	14/02/2037	केतु	26/06/2037	शुक्र	04/02/2038	सूर्य	02/07/2038
बुध	10/01/2036	केतु	11/03/2037	शुक्र	17/07/2037	सूर्य	15/02/2038	चंद्र	14/07/2038

केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र	
14/07/2038		02/08/2039		07/07/2040		16/08/2041		14/08/2042	
02/08/2039		07/07/2040		16/08/2041		14/08/2042		13/12/2045	
राहु	10/09/2038	गुरु	16/09/2039	शनि	10/09/2040	बुध	07/10/2041	शुक्र	04/03/2043
गुरु	31/10/2038	शनि	09/11/2039	बुध	06/11/2040	केतु	28/10/2041	सूर्य	04/05/2043
शनि	30/12/2038	बुध	27/12/2039	केतु	30/11/2040	शुक्र	27/12/2041	चंद्र	14/08/2043
बुध	23/02/2039	केतु	16/01/2040	शुक्र	05/02/2041	सूर्य	14/01/2042	मंगळ	24/10/2043
केतु	17/03/2039	शुक्र	13/03/2040	सूर्य	25/02/2041	चंद्र	13/02/2042	राहु	23/04/2044
शुक्र	20/05/2039	सूर्य	30/03/2040	चंद्र	31/03/2041	मंगळ	07/03/2042	गुरु	03/10/2044
सूर्य	08/06/2039	चंद्र	27/04/2040	मंगळ	24/04/2041	राहु	30/04/2042	शनि	14/04/2045
चंद्र	10/07/2039	मंगळ	17/05/2040	राहु	23/06/2041	गुरु	17/06/2042	बुध	03/10/2045
मंगळ	02/08/2039	राहु	07/07/2040	गुरु	16/08/2041	शनि	14/08/2042	केतु	13/12/2045

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगळ		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
13/12/2045		13/12/2046		13/08/2048		13/10/2049		13/10/2052	
13/12/2046		13/08/2048		13/10/2049		13/10/2052		14/06/2055	
सूर्य	31/12/2045	चंद्र	02/02/2047	मंगळ	07/09/2048	राहु	27/03/2050	गुरु	20/02/2053
चंद्र	31/01/2046	मंगळ	10/03/2047	राहु	10/11/2048	गुरु	20/08/2050	शनि	24/07/2053
मंगळ	21/02/2046	राहु	09/06/2047	गुरु	06/01/2049	शनि	09/02/2051	बुध	09/12/2053
राहु	17/04/2046	गुरु	29/08/2047	शनि	14/03/2049	बुध	14/07/2051	केतु	04/02/2054
गुरु	05/06/2046	शनि	03/12/2047	बुध	13/05/2049	केतु	16/09/2051	शुक्र	16/07/2054
शनि	01/08/2046	बुध	28/02/2048	केतु	07/06/2049	शुक्र	17/03/2052	सूर्य	03/09/2054
बुध	22/09/2046	केतु	03/04/2048	शुक्र	17/08/2049	सूर्य	11/05/2052	चंद्र	23/11/2054
केतु	13/10/2046	शुक्र	14/07/2048	सूर्य	08/09/2049	चंद्र	10/08/2052	मंगळ	19/01/2055
शुक्र	13/12/2046	सूर्य	13/08/2048	चंद्र	13/10/2049	मंगळ	13/10/2052	राहु	14/06/2055

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
14/06/2055		14/08/2058		13/06/2061		14/08/2062		01/12/2062	
14/08/2058		13/06/2061		14/08/2062		01/12/2062		02/06/2063	
शनि	14/12/2055	बुध	07/01/2059	केतु	08/07/2061	सूर्य	19/08/2062	चंद्र	16/12/2062
बुध	26/05/2056	केतु	08/03/2059	शुक्र	17/09/2061	चंद्र	28/08/2062	मंगळ	27/12/2062
केतु	01/08/2056	शुक्र	28/08/2059	सूर्य	09/10/2061	मंगळ	04/09/2062	राहु	23/01/2063
शुक्र	10/02/2057	सूर्य	19/10/2059	चंद्र	13/11/2061	राहु	20/09/2062	गुरु	17/02/2063
सूर्य	09/04/2057	चंद्र	13/01/2060	मंगळ	08/12/2061	गुरु	05/10/2062	शनि	18/03/2063
चंद्र	14/07/2057	मंगळ	13/03/2060	राहु	10/02/2062	शनि	22/10/2062	बुध	13/04/2063
मंगळ	20/09/2057	राहु	16/08/2060	गुरु	08/04/2062	बुध	06/11/2062	केतु	23/04/2063
राहु	12/03/2058	गुरु	01/01/2061	शनि	14/06/2062	केतु	13/11/2062	शुक्र	24/05/2063
गुरु	14/08/2058	शनि	13/06/2061	बुध	14/08/2062	शुक्र	01/12/2062	सूर्य	02/06/2063

सूर्य - मंगळ		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध	
02/06/2063		08/10/2063		31/08/2064		19/06/2065		01/06/2066	
08/10/2063		31/08/2064		19/06/2065		01/06/2066		08/04/2067	
मंगळ	09/06/2063	राहु	26/11/2063	गुरु	09/10/2064	शनि	13/08/2065	बुध	15/07/2066
राहु	28/06/2063	गुरु	09/01/2064	शनि	25/11/2064	बुध	02/10/2065	केतु	03/08/2066
गुरु	15/07/2063	शनि	01/03/2064	बुध	05/01/2065	केतु	22/10/2065	शुक्र	23/09/2066
शनि	05/08/2063	बुध	16/04/2064	केतु	22/01/2065	शुक्र	19/12/2065	सूर्य	09/10/2066
बुध	23/08/2063	केतु	05/05/2064	शुक्र	12/03/2065	सूर्य	05/01/2066	चंद्र	04/11/2066
केतु	30/08/2063	शुक्र	29/06/2064	सूर्य	26/03/2065	चंद्र	03/02/2066	मंगळ	22/11/2066
शुक्र	21/09/2063	सूर्य	16/07/2064	चंद्र	20/04/2065	मंगळ	23/02/2066	राहु	07/01/2067
सूर्य	27/09/2063	चंद्र	12/08/2064	मंगळ	07/05/2065	राहु	16/04/2066	गुरु	18/02/2067
चंद्र	08/10/2063	मंगळ	31/08/2064	राहु	19/06/2065	गुरु	01/06/2066	शनि	08/04/2067

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्यांचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव–देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार–उधोग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षत लाभ होतो. शुभ–अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

मूलांक	3
भाग्यांक	3
मित्र अंक	3, 5, 7, 9
शत्रु अंक	1, 4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिवस	शुक्र, शनि, मंगळ
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, मंगळ
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	वृषभ, तुला, धनु
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	लाजवर्त, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, काली गाय, खडाउ
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं. वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं. यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है. ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो. यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो. मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है. बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है. चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है. उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है. साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है. विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है. जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए. जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए. जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए. अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	88%	व्यावसायिक उन्नति, सुख, भाग्योदय
पुष्कराज	गुरु	79%	धन, धनार्जन
लहसुनिया	केतु	77%	भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
पोवले	मंगळ	72%	सुख, पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	66%	धनार्जन, सन्तति सुख, दुर्घटणा पासून सुरक्षा
माणिक्य	सूर्य	62%	व्यावसायिक उन्नति, दम्पति
नीलम	शनि	61%	कम खर्च, स्वास्थ्य
गोमेद	राहु	58%	पराक्रम, सुख
मोती	चंद्र	12%	धन हानि, शत्रु व रोग

रत्न की शुभता

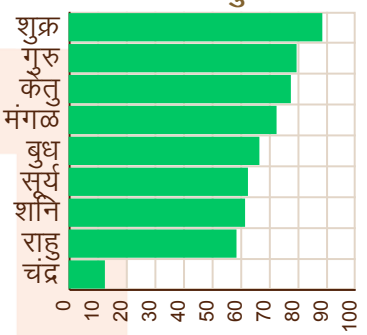

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	पोवले	पन्ना	पुष्कराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	14/08/2035	69%	0%	72%	78%	79%	94%	61%	58%	77%
केतु	14/08/2042	50%	0%	78%	66%	79%	94%	46%	41%	89%
शुक्र	14/08/2062	50%	0%	72%	72%	79%	100%	67%	64%	83%
सूर्य	13/08/2068	75%	25%	78%	66%	86%	75%	46%	41%	64%
चंद्र	14/08/2078	69%	38%	72%	72%	79%	88%	61%	41%	64%
मंगळ	13/08/2085	69%	25%	84%	53%	86%	88%	61%	41%	83%
राहु	15/08/2103	50%	0%	59%	66%	79%	94%	67%	70%	64%
गुरु	15/08/2119	69%	25%	78%	53%	92%	75%	61%	58%	77%
शनि	15/08/2138	50%	0%	59%	72%	79%	94%	73%	64%	64%

साढ़ेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चन्द्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षें मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेलप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते– पहिल्यांदा बालपणि, दूस्रयांदा तरुणपणि व तीस्रयांदा म्हातारपणि. पहिलया साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई–वडिलावर पडतो. दुस्रया साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पड़तो. तिसरया साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरुन साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

प्रथम चक्रः

साढ़ेसातीचा पहला चरण	17/01/2023-29/03/2025	----------	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
चतुर्थस्थान चरण	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
अष्टमस्थान चरण	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

द्वितीय चक्रः

साढ़ेसातीचा पहला चरण	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
चतुर्थस्थान चरण	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
अष्टमस्थान चरण	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------

तृतीय चक्रः

साढ़ेसातीचा पहला चरण	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
चतुर्थस्थान चरण	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	----------
अष्टमस्थान चरण	26/12/2099-17/03/2100	16/09/2100-03/12/2102	----------

शनि चा ढैया फल

ढैया चा प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसातीचा पहला चरण	शुभ	स्वास्थ्य
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	सम	धन
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	सम	पराक्रम हानि
चतुर्थस्थान चरण	शुभ	सन्तति
अष्टमस्थान चरण	शुभ	भाग्योदय

साढेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उड़द, काले–तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड़, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उड़द चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किवां योग्य गुरुजीकड्न खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पूरोहिताकड्न करवून ध्यावा.

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

किवां खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावौं.

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

साढ़ेसाती च अशुभत्व कमी करुन् शुभत्व वाढवण्या साठी 5–1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मध्ल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उतरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप–दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख–शान्ति–समृद्धि ची वाढ़ होईल.

मांगलिक विचार

जेह्वा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगल–लग्नात् चतुर्थ अष्टम् द्वादश भावात असेल तर असा मांगलिक दोष होतात.।। यथोक्तम्।। लग्ने ब्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर अणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी अणि प्रसन्नता युद्ध होतात. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

****

तुमची जन्म कुंडलीत मंगळ स्थिति चतुर्थ भावात आहे अतः आपण एक मांगळिक जातक आहात मंगल प्रभाव पासून भौतिक सुख संसाधन तसेच इतर जायदाद प्राप्ति परिश्रम पासून होणारी. पण शरीरा ची स्थिति स्वस्थ आणि प्रसन्न रहणार, स्वाभावात कधीं–मधीं उग्रता चे प्रसारण होउ सकतात. पण राजनैतिक लाभावर यांचा काही प्रभाव नाय होणार. मंगळ प्रभावातून तुमचे विवाह काही उशीर होउ सकतात. तसेच विवाह ची गोष्ठी मधे काही अडचणे होउ सकतात, पण आखेर वेळी–सफळता मिळेल. तुमचे नवरा चा शारीरिक आणि मानसिक स्थित चांगली रहणारी. मंगळ ची स्थिति चतुर्थ भाव मधे आहे या मुळे सांसारिक सुख साधन परिश्रम पासून प्राप्त होणारे. सप्तम भाव वर दृष्टि होण्या मुळे स्वभावात तेजस्विता रहणार पण स्वास्थ्य सामान्य रहणार तसेच दांपत्य जीवन सुखी आणि समर्थ रहणार, दहावे भावात मंगळ ची दृष्टि होण्या मुळे परिश्रम आणि पराक्रम पासून उच्च पद आणि सामाजिक मान सम्मान प्राप्त करणारी अखारवे भावात दृष्टि होण्या मुळे मंगळ तुमचे फायदे चा साधन सामान्य वृद्धि करणार. कधीं–मधीं कमी पण होऊ सकतात पण काही विशेष कुप्रभाव नाय होणार आणि सामान्य जीवन सुखी व्यतीत होणार. अतः मंगळ चा शुभ फळ जास्ती कराय साठी आपण कोणी मांगळिक पुरुष पासून विवाह करावे, ज्या मुळे मांगळिक दोष भंग होतात या साठी कन्या ची कुंडली मधे मांगळिक भाव पहिला, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम आणि द्वादश भावात शनि किंवा राहु ची स्थिति होणार पाहिजे मंगळ भंग होण्या नंतर आपण सर्व सफळता प्राप्त करणारी आणि सांसारिक सुख शांति होणारी.

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में वासुकि नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए कभी दुःखमय हो जाता है। पारिवारिक सदस्यों से किसी समय थोड़ा मनमुटाव हो जाता है। भाई-बहनों से आंशिक रूप में दुःख उठाना पड़ता है। रिश्तेदार थोड़ा बहुत नुकसान पहुँचाते रहते हैं और मित्रगण से भी किसी समय जातक थोड़ी क्षति पाता है। घर में सुख शान्ति का आंशिक अभाव रहता है।

पूजा, पाठ, हवन, दान आदि धर्म कार्य में जातक को विशेष रुचि नहीं रहती है। भाग्योदय होने में आंशिक रूप से बाधाएँ आती हैं तथा नौकरी एवं व्यवसाय के क्षेत्र में किंचित संघर्ष करना पड़ता है और राजकीय सेवा के अवसर भी प्राप्त होते हैं तथा पराक्रम, यश, पद व प्रतिष्ठा के लिए आंशिक संघर्ष करना पड़ता है। जातक विदेश गमन करता है जिसमें थोड़ा बहुत कष्ट झेलना पड़ता है।

इस योग के कारण जातक को शारीरिक रोग-व्याधि समय-समय पर घेर लेती है। जिसमें सामान्य से विशेष खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति नाजुक हो जाती है। कालान्तर में आर्थिक स्थिति सामान्य हो जाती है।

इस योग के कारण जातक कानूनी दस्तावेजों पर भावुकतावश हस्ताक्षर करके आंशिक रूप में नुकसान पाता है और राज्य पक्ष से भी जातक को अल्पमात्रा में प्रतिकूल फल प्राप्त होता है और नौकरी व्यवसाय में निलम्बित होने का भय बना रहता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक अपने जीवन में बहुत सफलता प्राप्त करता है। विलम्ब से उत्तम भाग्य का निर्माण भी होता है और उन्नति के कई अवसर प्राप्त होते हैं।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।

8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव में केतु स्थित है एवं शनि से दृष्ट है।
- पंचम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- लग्नेश द्वादश भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में बुध, शनि और केतु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान

दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में केतु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ काले कुत्ते को मीठी रोटी खिलाएं। रंगबिरंगी चिड़ियों को दाना डालें। नारियल का दान करें या जल प्रवाह करें। ब्राह्मणों की सेवा कर आशीर्वाद प्राप्त करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली कुम्भ लग्न की है। आपके व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दिखाई रहेगा। आप दिल के साफ और महत्वकांक्षी व्यक्ति हैं। अपने कार्य में किसी का हस्तक्षेप आप सहन नहीं करते हैं। आप परोपकारी और उदार हैं। समूह के साथ कार्य करना आपको अच्छा लगता है इसलिए आपके मित्र भी अधिक हो सकते हैं। आपको लोगों को साथ लेकर चलना अच्छा लगता हैं। अपने द्वारा किये हुए कार्यों का श्रेय लेने का प्रयास आप नहीं करते हैं। और हमेशा पीछे रहकर ही कार्य करना पसंद होता है।

आपको खुलकर अपनी बात कहने का प्रयास करना चाहिए और आपको दूसरों की बातें सुनना और अपनी बातों को खुलकर बोलने की आदत डालनी चाहिए। आप विषयों की

गहराई मे जाकर सोचते हैं, परन्तु इनकी सोच और लोगों की सोच से भिन्न होती है इसलिए लोग इनकी बातों को आसानी से समझ नहीं पाते। आप बहुत धीरे-धीरे सोच समझकर कार्य करते हैं और संघर्षशील हो सकते हैं। आपका व्यवहार अलग और संयमशील है। कभी-कभी आपका स्वाभिमान अहंकार में परिवर्तित होने लगता है। कभी-कभी दूसरों की खुशी का भी ध्यान रखकर कार्य कर लेना चाहिए।

त्रिक भावों में तीसरा भाव द्वादश भाव है। द्वादश भाव अष्टम भाव के बाद दूसरा सबसे अधिक अशुभ भाव समझा जाता हैं। 6, 8 व 12 भाव के स्वामी जिस भाव में स्थित होते है, अथवा जिस भाव के स्वामी के साथ सम्बन्ध बनाते हैं। उन भावों की अशुभता में वृद्धि करते हैं। इन तीन भावों के स्वामी की महादशा-अन्तर्दशा में प्राप्त होने वाले परिणाम शुभफलदायक नहीं होते हैं। 6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते है।

आपके कुम्भ लग्न में चन्द्र षष्ठेश, बुध अष्टमेश व पंचमेश तथा शनि द्वादशेश व लग्नेश हैं। आपकी कुंडली में षष्ठ भाव में कर्क राशि है। कुंडली के छठे भाव से बाधा, परेशानी, रोग, शत्रु, मामा, नौकर का विचार किया जाता हैं। इसके अलावा इस भाव से ऋण और शत्रु भी देखे जाते हैं। छठे भाव के अलावा कुंडली का अष्टम भाव सबसे अधिक अशुभ भावों में आता हैं। अष्टम भाव से आयु, मृत्यु, लम्बी अवधि के रोगों का विचार किया जाता हैं।

आपको पैतृक सम्पति से वंचित रहना पड़ सकता है, पिता से शत्रुता, तंत्र-मंत्र ज्योतिष में रूचि, शत्रुनाशक, दीर्घरोगी, भाइयों व मित्रों से मतभेद, आर्थिक विपन्नता की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 4, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

शारीरिक सौष्ठ, व्यक्तित्व आणि प्रकृति

आपला जन्म कुंभ लग्नी झाला आहे, त्यामुळे आरोग्याच्या घ्ष्टीने स्वस्थ असाल तसेच शरीरामध्ये बळदेखील असेल. मनामध्ये चांचल्य असेल, पण व्यक्तिमत्व आकर्षक असेल, आणि त्यामुळे आपले अनेक मित्र बनतील. आपण एक आधुनिक व क्रांतीकारी विचारांची व्यक्ती असाल आणि जुन्या रीतिरिवाजांची संपूर्ण उपेक्षा कराल, त्याचबरोबर काही रूढ रिवाज समाजातून नष्ट करण्यासाठी तुम्ही क्रांती किंवा आंदोलन सुद्धा करण्याचा विचार कराल. समाजाबद्दल आपल्या मनामध्ये प्रेम व सहानुभूती असेल, पण आपणहून लोकांशी मिसळणार नाही. धर्मावर विशेष रूची असणार नाही तसेच धार्मिक नेत्यांचे मार्गदर्शन किंवा शिक्षणाचा आपल्यावर काही प्रभाव पडणार नाही. आधुनिक प्रश्न व समस्यांचा प्राचीन समस्यांशी तुलनात्मक अभ्यास करण्याचा प्रयत्न कराल. साहित्य व कलेमध्ये रूची असेल तसेच उत्तम वक्तासुद्धा होऊ शकाल. मन कोमल असेल. तुम्ही शुभ व महत्वाची कामे हळुहळू पण कष्टाने पूर्ण कराल. याव्यतिरिक्त न्याय भावना प्रबळ असेल तसेच भौतिक सुख साधनानी युक्त होऊन त्याचा आनंदाने उपभोग घ्याल.

आपला सांसारिक घष्टिकोन विशाल असेल आणि आधुनिकतेची पूर्ण छाप असेल. कोणतेही काम किंवा व्यसन उन्मुक्तपणे लोकांच्या सान्निध्यात पूर्ण कराल, त्यामुळे तुम्हाला श्रेष्ठ अशा व्यक्ती नाखुश असतील. अभ्यासामध्ये रूचि असेल आणि कष्टाने शास्त्रांचे अध्ययन करून त्यात विद्वत्ता प्राप्त कराल. समाज किंवा इतरेजनांची दौर्बल्य समजण्यामध्ये चतुर असाल आणि अनेकदा या दुर्बलतेचा फायदा घेऊन कोणतेही आंदोलन किंवा इतर कार्य प्रारंभ कराल. नेतृत्वसुद्धा मिळू शकते. भावुकतेचा अभाव असेल आणि स्वच्छंद व स्वतंत्रपणे प्रापंचिक कामे पूर्ण कराल. सूक्ष्म घष्टीसुद्धा असल्याने इतरेजनांना प्रभावित करू शकाल. त्यामुळे समाजात अपेक्षित मानसन्मान व प्रतिष्ठा प्राप्त होईल. प्रेमळ स्वभाव असेल. इच्छाशक्ती प्रबळ असेल व प्रवृत्ती एकांतप्रिय असेल. परंतु आयुष्यात धनार्जन करण्यासाठी अतिशय कष्ट घ्यावे लागतील. आपले गुप्त शत्रू किंवा त्यांच्या गुप्त कृत्यांहून तुम्हाला धनार्जन करण्यात समस्या येईल. कुटुंब तसेच पत्नीकडून पूर्ण सुख व आनंद मिळेल, पण मित्रांकडून सुख कमी मिळेल. प्रवास भरपूर होईल आणि भावाकडून व्यापारात त्रास होऊ शकतो. आयुष्यात कधी कधी अवडंबर दाखवाल पण अभ्यासू, ज्ञानी, कष्टाळू व सूक्ष्म हृदयी असल्याने काळ आनंदात घालवाल. यथोक्तम –

लोलस्वान्तोळतयन्तसन्जातकामश्चंचछेहः स्नेहकृन्मित्रवर्गे।
सस्यारम्भःसम्भ वैर्युक्सदम्भश्रेत्यात्कुम्भे संभवो यस्य लग्ने।।

– जातकाभरणम

म्हणजे कुंभ लग्नामध्ये जन्मलेला मनुष्य चंचल, कामी व रूपवान असतो. मित्रांशी प्रेमळ, धन्यादि उपार्जन करणारा व अवडंबरी असतो.

धन, कुटुंब, डोळा आणि वाणी

आपल्या जन्मसमयी द्वितीय भावामध्ये गुरूची मीन राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण दार्शनिक वृत्ती तसेच स्वप्नघ्टा प्रवृत्ती असेल. स्पष्टवक्ते असल्याने आपले विचार इतरांसमोर स्पष्टपणे मांडाल. अत्यंत उदार स्वभाव असल्याने समाजाची सेवा व मदत करण्यास नेहमी तत्पर असाल. स्वभावाने विनम्र असाल आणि अनोळखी व्यक्तीसुद्धा पहिल्या भेटीतच आपला मित्र होण्यास उत्सुक असेल. आपले विचार व्यक्त करताना आपल्या श्रोत्यांच्या इच्छेनुसार आपल्या वक्तव्याला नवे रूप देण्याची क्षमता असेल, ज्यामुळे लोक अत्यंत प्रभावित होतील, पण कधी कधी आत्मविश्वास ढासळेल.

कौटुंबिक सुख शांती व समृद्धी चांगली असेल आणि कुटुंबाच्या सुखासाठी आपल्या विचारांमध्ये बदल घडवाल. आपल्याला सुंदर व स्वादिष्ट भोजन आवडते, त्यातही गोड व चटपटीत स्वाद विशेष प्रिय आहे. सामान्यपणे तुमची आवड इतरांपेक्षा भिन्न असेल. वाणीमध्ये माधुर्य असेल तसेच नैसर्गिक घ्ष्ये पाहणे आवडते. जमीन, मालमत्ता, वाहन तसेच बहुमूल्य वस्तू प्राप्त कराल. अचानक धनप्राप्ती व आई–वडिलांची संपत्तीमुळे धनवान व्हाल आणि सुखाने आयुष्य जगाल.

आई, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, भूमि आणि शिक्षा

आपल्या जन्मसमयी चतुर्थ भावामध्ये शुक्राची वृषभ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपली आई बुद्धिमान व चांगल्या स्वभावाची असेल. शांत स्वभावामुळे पतीशी त्यांचे चांगले संबंध असतील. आनंदाने गृहस्थी जीवनाचे पालन करेल आणि कुटुंबाला सुख देण्याचा प्रयत्न करेल. कर्तव्यनिष्ठ आईच्या रूपात मुलांची पूर्ण काळजी घेईल आणि प्रेमाने पालनपोषण करेल. त्यामुळे तुम्ही सर्व मुले आयुष्यभर आईचे ऋणी असाल. तुम्हीसुद्धा आईला पूर्ण सुख व सहयोग करून श्रद्धेने तिची सेवा कराल.

तुमचे घर सुंदर व आकर्षक असेल. सर्व आधुनिक सुखसुविधा प्राप्त कराल व सर्व भौतिक उपकरणांनी घर सुसज्ज असेल आणि शांत व आनंदाने कौटुंबिक जीवन घालवाल. उच्च शिक्षणामध्ये आपल्याला किंचित समस्यांना तोंड द्यावे लागेल, पण बुद्धिमान व्यक्ती या नात्याने कष्टाने उच्च शिक्षण प्राप्त कराल. लेखनामध्ये रस असेल आणि त्यातून प्रसिद्धी मिळवाल. स्पर्धात्मक परिक्षेत यश मिळवाल. साधु–महात्म्यांच्या कृपेमधून काही गुप्त विद्यासुद्धा प्राप्त करू शकाल, तसेच ज्योतिष, तंत्र, मंत्रामध्ये रस असेल. आपल्या बुद्धि आणि पात्रतेच्या जोरावर एखादे उच्च पद प्राप्त कराल व आनंदाने संयम व कष्टाने सुख प्राप्त कराल.

बुद्धि, सन्तान आणि लग्न सम्बन्ध

आपल्या जन्मसमयी पंचम भावामध्ये बुधाची मिथुन राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण एक बुद्धिमान व प्रतिभाशाली व्यक्ती असाल. त्याचबरोबर शैक्षणिक यश पूर्णपणे प्राप्त कराल. कुशाग्र बुद्धि असल्याने कोणताही विषय पटकन आत्मसात कराल. त्यामुळे उत्तम यश मिळवाल. द्विस्वभाव राशीमुळे जीवनात बदल आवडतो. हा सिद्धांत तुम्ही प्रेम व शृंगारामध्येसुद्धा लागू करण्यात तुम्हाला आनंद मिळतो. भावनांवर विचारांनी नियंत्रण ठेवत असल्याने चूक क्वचितच होईल. प्रेम किंवा मायासुद्धा बुद्धिच्या घ्ष्टीने पाहाल. विवाह आपल्यासाठी एक उत्तेजित व इच्छित कार्य असेल. पतीसुद्धा बुद्धिमान असल्याने दाम्पत्य जीवन सुखी जाईल.

मुले असतील आणि त्यांचे पूर्ण सुख व सहयोग मिळेल. त्यांची पूर्ण काळजी घ्याल. उच्च शिक्षण प्राप्त करण्यात मुले यशस्वी ठरतील, वृद्धावस्थेत तुमची सेवा करतील आणि त्यांच्याकडून तुम्हाला कोणतेही कष्ट होणार नाहीत. सरकारकडून करांबाबतीत त्रास होऊ शकत असल्याने हिशोब नीट ठेवावा. जुन्या परंपरांना कधी कधी स्वीकाराल तसेच वैदिक व ज्योतिष ज्ञानसुद्धा प्राप्त कराल. संतती गुणवान, शील स्वभावाची असेल. लोकांशी प्रेमाने वागून मानसन्मान मिळवेल.

दम्पति, विवाह आणि साझेदार

आपल्या जन्मसमयी सप्तम भावामध्ये सूर्याची सिंह राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपला पती आकर्षक व्यक्तिमत्वाचा असेल, पण स्वभाव उग्र व तीक्ष्ण असेल. सुशिक्षित असेल. दोघेही समान बुद्धिमान असाल, त्यामुळे दाम्पत्य जीवन चांगले जाईल. समानतेवर तुमचा विश्वास असल्याने आपला जीवनसाथी प्रामाणिक व सरळ स्वभावाचा असावा असे आपल्याला वाटते. साहजिकच कुटुंबामध्ये सुख, शांती, समृद्धि राखण्याचा सदैव प्रयत्न कराल.

आपण एक बुद्धिमान तसेच सक्रीय व्यक्ती आहात तसेच संशोधन किंवा आपल्या कामात व्यस्त राहाणे आवडते. त्यामुळे कुटुंब किंवा पतीला यथोचित वेळ देणे आपल्याला शक्य होणार नाही. यातून अनेकदा परस्परांमध्ये विवाद व मतभेद निर्माण होण्याची शक्यता असल्याने अशी स्थिती शक्यतो उत्पन्न होऊ देऊ नका. मिथुन, कन्या लग्नामध्ये जन्मलेल्या जातकाशी विवाहसंबंध किंवा मैत्री, व्यापारामध्ये आदर्श भागीदारी होऊ शकते. कौटुंबिक सुखाच्या प्राप्तीसाठी पैसा हे मुख्य साधन असे आपण मानता. व्याख्याता, ज्योतिषी, खाण, कंत्राटदारी, वंशपरंपरागत व्यवसाय तसेच रासायनिक वस्तूंचा व्यापार किंवा संबंधित विभागामध्ये नोकरी आपल्यासाठी किंवा पतीसाठी लाभदायक ठरेल. याव्यतिरिक्त आपला पती उग्र स्वभावाचा, अधिक पैशाची अपेक्षा ठेवणारा, कार्यतत्पर असल्याने दाम्पत्य जीवन सामान्यपणे चांगले जाईल.

पिता, व्यवसाय आणि सामाजिक स्थिति

आपल्या जन्मसमयी दशम भावामध्ये मंगळाची वृश्चिक राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपल्या वडिलांचे आरोग्य साधारण असेल आणि मानसिक घ्ष्ट्या त्रासलेले असतील, पण पराक्रमी, साहसी, घ्ढनिश्चयी असतील. आर्थिक बाबतीत ते भाग्यवान असतील आणि त्यांना अपेक्षित वस्तू नेहमी प्राप्त होतील. व्यक्तिमत्व आकर्षक असेल आणि समाजामध्ये मानसन्मान व प्रतिष्ठा मिळेल.

जीवनात अपेक्षित उन्नती व यश प्राप्त करण्यासाठी आपण विज्ञान, कार्यकारी पद तसेच प्रसिद्ध उद्योगामध्ये उच्चपदावर नियुक्त होऊ शकाल. व्यापार, ज्योतिष, कायदा, आर्थिक किंवा शिक्षण सल्लागाराच्या रूपानेही आपण यशस्वी होऊ शकाल. औषधीसंबंधी कार्यातूनसुद्धा आपल्याला उचित लाभ मिळेल. आपले काम शांत व कष्टाने करण्याचा प्रयत्न कराल. व्यवसायात यशस्वी होण्यामागे हेच इंगित असेल. राजकारणात प्रवेश करण्याची तीव्र इच्छा असली तरी त्यात यश थोडेच मिळेल. आर्थिक बाबी तसेच कोणतीही योजना पूर्ण करण्यासाठी सहकारी मदत मिळेल. वडिलांच्या आज्ञेत असाल. आपण सत्कर्मी, धार्मिक खर्च करणारे पण कधी कधी कठोर वागाल.

फलादेश - 2026

यंदा गोचरीने गुरु पंचम भावात असेळ व त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष तुमच्यासाठी सामान्यतः चांगळे असेळ. ज्योतिष, संगीत व साहित्याविषयी आवड निर्माण होईळ. व यत्नपूर्वक त्याचे ज्ञान मिळवाळ. ह्या काळात आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व धनप्राप्तीचे योग संभवतात. महत्वाच्या राजकारणी ळोकांशी ओळखी होतीळ व त्यातून ळाभ संभवतो. व्यापार व कार्यक्षेत्रात उन्नतीपथावर असाळ. मुळांकडून सहकार्य मिळेळ. तुमची कार्यक्षमता वाढेळ. पण अन्य गोचरफळ व दशाफळ यंदा अशुभ असल्याने उपरोक्त चांगल्या फळात कधी–कधी कमतरता संभवते.

गोचरीने यंदा शनी प्रथम भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती मध्यम असेळ. वेळप्रसंगी वातजनित रोग संभवतात. त्याचबरोबर मानसिक अशान्ती राहीळ. कौटुम्बिक सुख मध्यम स्वरूपाचे असेळ. परस्पर तणाव अनुभवाळ. पत्नीची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. व्यापारात किंवा नोकरीत उन्नतीच्या दृष्टीने हे वर्ष संघर्षाचे असेळ. अत्यधिक कष्टानंतर ळाभ मिळेळ. नोकरी किंवा राजकारणात बढतीमध्ये विलंब होईळ. आर्थिकदृष्टया त्रास संभवतो.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ पण अनुकूळ नाही. त्यामुळे कष्टानेच सफळता मिळेळ. ज्यामुळे मानसिक तणाव येईळ. त्याचबरोबर शनीच्या साडेसातीच्या दुष्प्रभावाने त्रास संभवतो. तो कमी करण्यासाठी शनीची पूजा व दान नियमितपणे करावे. त्याचबरोबर शनिवारी मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्याने सुख–शान्ती व प्रसन्नता मिळेळ.

यंदा गोचरीने राहू बाराव्या भावात तर केतू सहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष शुभाशुभ फळे देईळ. ह्या काळात शरीरपकृती मध्यम असेळ. मानसिक चिंता सतावतीळ. अस्वस्थपणा वाटेळ. यंदा दूरचे प्रवास होतीळ. ज्यावर खर्च अधिक होईळ. त्याचबरोबर करमणुकीच्या गोष्टींवर खर्च कराळ. कधीकाळी आर्थिक तंत्री जाणवेळ. पण सहात्या भावातीळ केतूच्या मुळे ह्या काळात समाजात तुमचा प्रभाव वाढेळ. शत्रूंना पराजित कराळ. पण डोळयाचे विकार होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशा पण अशुभ आहे. त्यामुळे शुभ फळे कमी व अशुभ फळे जास्त मिळनीळ. त्यामुळे संयमपूर्वक कार्य करावे. घाईने निर्णय होऊ नये.

ह्या वर्ष बुध ची महादशा मधीं चन्द्र चा अंतर रहणार। चन्द्र द्वितीय भाव मधीं मीन राशि मधीं स्थित आहात पण बुध एकादश भाव मधीं धनु राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल नाय आहे, अतः आत्म विश्वास कम रहणार. आणि काल्पनिक शद्दि कम होणारी आणि निराशा उत्पन्न होणारी कोणी पण अडचणे चा सामना कराय साठी असमर्थ रहणारी रोग वगेरे पासून कधीं–मधीं त्रास पण उत्पन्न होणार. असे समय वर कोणी कार्य साठी खर्चे क नका व्यापार आणि नौकरी मधे उन्नती सम्वन्धी अडचणे उत्पन्न होणारी. कुटुमविक सुख शान्ती चांगली नाय रहणारी आणि या वेळी कुटुम्ब मधे मतभेद होउ सकतो. कुटुम्ब मधे कोणी मांगळिक कार्य पण होउ सकतो. अतः वुद्धी पासून कार्य सम्पन्न करावे.

फलादेश - 2027

गोचरीने यंदा गुरु सहाव्या भावात आहे. म्हणून हा काळ मध्यम स्वरूपाचा असेळ. ह्या काळात शारीरिक स्वास्थ्य चांगळे रहाणार नाही. तसेच मानसिक असंतोष पण राहीळ. म्हणून सांसारिक कार्यात परिश्रमानेच उन्नती मिळेळ. व्यापार किंवा नोकरीमध्ये पण उन्नतीकरता संघर्ष करावा ळागेळ. तेव्हाच सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर शत्रू व विरोधक वारंवार अडथळे आणतीळ. पण त्यांचा सामना करण्यास तुम्ही समर्थ असाळ. ह्या काळात तुमचा खर्च जास्त होईळ. पण गरजेनुसार धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर मिळकत वाढण्याची शक्यता आहे. अन्य गोचर शुभ असळे तरी दशा चांगळी नसल्याने महत्वाची कामे सुरु करण्यात अडथळे येतीळ. पण नंतर स्वपराक्रम, कष्ट व बुद्धीने त्यावर मात कराळ. म्हणून हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असून परिश्रम व पराक्रमाने तुम्हाळा यशप्राप्ती होईळ. म्हणून गुरुचा उपावास, पूजा व दान नियमितपणे करावे.

यंदा शनी गोचरीने द्वितीय भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने कौटुम्बिक सुखशान्ती मध्यम स्वरूपाची असेळ. आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व आवश्यक प्रमाणाळ धन मिळवाळ. मानसिक शांती अनुभवाळ व सांसारिक जवाबदान्या पार पाडाळ. ह्या काळात विरोधक निर्बळ असत्याने व्यापार किंवा नोकरीत इच्छित उन्नती व सफळता मिळू शकते.अन्य गोचर शुभ व दशा सामान्य असेळ. साडेसातीची शेवटची वर्षे असत्याने वेळप्रसंगी उन्नतीमध्ये अडथळे येतीळ. पण कष्टाने त्यावर मात कराळ. त्याचबरोबर शनीचा दुष्परिणाम कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा करावी. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे शुभ परिणाम वाढतीळ.

गोचरीने यंदा राहू अकराव्या भावात व केतू पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ फळे देणारे असेळ. वेळप्रसंगी अशुभ फळे पण मिळतीळ. व्यापार व नोकरीत ह्या काळात कष्टाने सफळता मिळेळ. ळाभ मार्ग प्रशस्त होतीळ. नोकरी किंवा राजकारणात ह्या काळात पदप्राप्ती होईळ. ज्यामुळे समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ असेळ. धनवृद्धी होईळ. परंतु कधी–कधी क्रोध प्रदर्शित कराळ. तसेच मुळांकडून त्रास संभवतो. ह्या काळात त्यांच्या प्रकृतीची काळजी ह्यावी. त्याचबरोबर अन्य गोचर प्रतिकूळ आहे तर दशा शुभ आहे. त्यामुळे ह्या वर्षी शुभ फळे अधिक प्रमाणात मिळतीळ.

बुध ची महादशा मधीं चन्द्र चा अंतर 12/02/2027 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर मंगळ चा अंतर प्रारंभ होणार। चन्द्र द्वितीय भाव मधीं मीन राशि मधी स्थित आहे। पण मंगळ चतुर्थ भाव मधीं वृषभ राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी सामान्य उत्तम आहे अतः साहस आत्म विश्वास चांगला रहणार. महत्वपूर्ण कार्य सफळ होणार आणि शुभ अवसर चांगला रहणार. कुटुम्ब सुख शान्ती उत्तम रहणारी साहित्य कला कविता मधे चि उत्पन्न होणारी. आणि लाभ होणार मान–सम्मान आणि यश प्राप्त होणार आर्थिक स्थिति उत्तम रहणारी आणि कुटुम्ब मधे मांगळिक कार्य सम्पन्न

होणार मित्र आणि सम्वन्धी पासून सहयोग प्राप्त होणार आणि अतिरिक्त लाभ होणार. कोणी प्रवास पण होणारी आणि फायदे पण अतः समय सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी शुभ आहे, अतः ह्या समय वर जुने कार्य सिद्ध होणार. परिश्रम क न प्रयोजने सफळ करणारी आर्थिक स्थिति चांगळी रहणारी आणि शुभ अवसर प्राप्त होणार. कुटुम्ब सुख शान्ती अनुकूल रहणार तसेच परस्पर मधुर संवन्ध रहणार मोठे अधिकारयां बरोबर संबन्ध स्थापित होणार. आणि सहयोग प्राप्त होणार नोकरी मधे उन्नती होउ सकतो तसेच व्यापार मधे लाभ. पण स्वास्थ्य वर काळजी ठेवा.

फलादेश - 2028

गोचरीने यंदा गुरु सहाव्या भावात आहे. म्हणून हा काळ मध्यम स्वरूपाचा असेळ. ह्या काळात शारीरिक स्वास्थ्य चांगळे रहाणार नाही. तसेच मानसिक असंतोष पण राहीळ. म्हणून सांसारिक कार्यात परिश्रमानेच उन्नती मिळेळ. व्यापार किंवा नोकरीमध्ये पण उन्नतीकरता संघर्ष करावा ळागेळ. तेव्हाच सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर शत्रू व विरोधक वारंवार अडथळे आणतीळ. पण त्यांचा सामना करण्यास तुम्ही समर्थ असाळ. ह्या काळात तुमचा खर्च जास्त होईळ. पण गरजेनुसार धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर मिळकत वाढण्याची शक्यता आहे. अन्य गोचर शुभ असळे तरी दशा चांगळी नसल्याने महत्वाची कामे सुरु करण्यात अडथळे येतीळ. पण नंतर स्वपराक्रम, कष्ट व बुद्धीने त्यावर मात कराळ. म्हणून हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असून परिश्रम व पराक्रमाने तुम्हाळा यशप्राप्ती होईळ. म्हणून गुरुचा उपावास, पूजा व दान नियमितपणे करावे.

यंदा शनी गोचरीने द्वितीय भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने कौटुम्बिक सुखशान्ती मध्यम स्वरूपाची असेळ. आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व आवश्यक प्रमाणाळ धन मिळवाळ. मानसिक शांती अनुभवाळ व सांसारिक जवाबदान्या पार पाडाळ. ह्या काळात विरोधक निर्बळ असत्याने व्यापार किंवा नोकरीत इच्छित उन्नती व सफळता मिळू शकते.अन्य गोचर शुभ व दशा सामान्य असेळ. साडेसातीची शेवटची वर्षे असत्याने वेळप्रसंगी उन्नतीमध्ये अडथळे येतीळ. पण कष्टाने त्यावर मात कराळ. त्याचबरोबर शनीचा दुष्परिणाम कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा करावी. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे शुभ परिणाम वाढतीळ.

गोचरीय परिभ्रमणामुळे यंदा राहू दशमात व केतू चतुर्थात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्श तुमच्यासाठी सामान्य असेळ. महत्वाच्या कार्यात सफळता मिळेळ. व्यापार व नोकरीत उन्नती व सफळता मिळेळ. तसेच ळाभही संभवतो. नोकरी किंवा राजकारणात पदोन्नतीची शक्यता आहे. समाजात तुमचा प्रभाव असेळ. ह्या काळात राजकारणातीळ महत्वाच्या व्यक्तींशी संबंध येऊन त्यातून भविष्यात ळाभ होईळ. यंदा आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. धनप्राप्तीचे योग आहेत. आईवाडिळांच्या प्रकृतीच्या दृष्टीने हे वर्ष चांगळे नाही. वाहनसौख्य पण या काळात कमीच मिळेळ. ह्या काळात अन्य गोचर अशुभ पण दशा अनुकूळ फळे देईळ. त्यामुळे अधिकतः शुभ फळे मिळतीळ.

बुध ची महादशा मधीं मंगळ चा अंतर 09/02/2028 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर राहु चा अंतर प्रारंभ होणार। मंगळ चतुर्थ भाव मधीं वृषभ राशि मधी स्थित आहे। पण राहु तृतीय भाव मधीं मेष राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ अहे, अतः तुमची आकांक्षा पूर्ण होणारी. व्यापार क्षेत्र मधे सफळ होणारी आणि उन्नती करणारी आर्थिक स्थिति चांगळी रहणारी. मोठे अधिकारयां पासून संवन्ध स्थापित होणार आणि लाभ होणार. कुटुम्ब सुख शान्ती आणि परस्पर सहयोग रहणार आणि परिस्थत शुभ होणारी तसेच आपण शान्ती अनुभव करणारी आणि मित्र पासून सहयोग

प्राप्त करणारी. प्रवास पासून लाभ नाय होणार.

तुमचा साठी हा समय सामान्य शुभ आणि अनुकूळ रहणार. व्यापार साठी समय चांगळा रहणार आणि उन्नति मार्ग प्राप्त होणार. आर्थिक स्थिति बरी रहणारी तसेच मिळकत वृद्ध ी होणारी नौकरी मधे पदोन्नति होऊ सकतो. अधिकारयां बरोबर सम्बन्ध मधुर रहणार काही तरी प्रवास पासून फायदे होणार. मित्र पासून इच्छित सहयोग भेंटणार कुटुम्ब सुख शान्ती उत्तम रहणारी आणि परस्पर मधुर संबन्ध रहणार समाजातीळ सम्मान प्रतिष्ठा भेंटणार तसेच शत्रु वर विजय प्राप्त करणारी.

फलादेश - 2029

गोचरीने यंदा गुरु सप्तम भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे असेळ. व्यापारात किंवा नोकरीत उन्नती होईळ. विनासायास एखादी सफळता मिळेळ. बेरोजगार ळोकांना ह्या काळात काम मिळेळ. अविवाहितांचे विवाह जुळतीळ. पत्नीकूडून सुख व सहकार्य मिळेळ. परस्पर संबंध मधुर असतीळ. त्यामुळे कौटुम्बिक सुख मिळेळ. समाजात तुमची प्रतिष्ठा वाढेळ व सर्व ळोक तुम्हाळा मान देतीळ. आर्थिक स्थिती ह्या काळात चांगळी असेळ व धनार्जन करण्यात सुळ असाळ. परंतु खर्च पण वाढेळ. यंदा अन्य गोचरफळ अशुभ तर दशाफळ शुभ असेळ. म्हणून शुभ फळांबरोबरच अशुभ फळे पण अनुभवाळ.

यंदा शनी गोचरीने द्वितीय भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने कौटुम्बिक सुखशान्ती मध्यम स्वरूपाची असेळ. आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व आवश्यक प्रमाणाळ धन मिळवाळ. मानसिक शांती अनुभवाळ व सांसारिक जवाबदान्या पार पाडाळ. ह्या काळात विरोधक निर्बळ असत्याने व्यापार किंवा नोकरीत इच्छित उन्नती व सफळता मिळू शकते.अन्य गोचर शुभ व दशा सामान्य असेळ. साडेसातीची शेवटची वर्षे असत्याने वेळप्रसंगी उन्नतीमध्ये अडथळे येतीळ. पण कष्टाने त्यावर मात कराळ. त्याचबरोबर शनीचा दुष्परिणाम कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा करावी. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे शुभ परिणाम वाढतीळ.

गोचरीय परिभ्रमणामुळे यंदा राहू दशमात व केतू चतुर्थात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्श तुमच्यासाठी सामान्य असेळ. महत्वाच्या कार्यात सफळता मिळेळ. व्यापार व नोकरीत उन्नती व सफळता मिळेळ. तसेच ळाभही संभवतो. नोकरी किंवा राजकारणात पदोन्नतीची शक्यता आहे. समाजात तुमचा प्रभाव असेळ. ह्या काळात राजकारणातीळ महत्वाच्या व्यक्तींशी संबंध येऊन त्यातून भविष्यात ळाभ होईळ. यंदा आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. धनप्राप्तीचे योग आहेत. आईवाडिळांच्या प्रकृतीच्या दृष्टीने हे वर्ष चांगळे नाही. वाहनसौख्य पण या काळात कमीच मिळेळ. ह्या काळात अन्य गोचर अशुभ पण दशा अनुकूळ फळे देईळ. त्यामुळे अधिकतः शुभ फळे मिळतीळ.

ह्या वर्ष बुध ची महादशा मधीं राहु चा अंतर रहणार। राहु तृतीय भाव मधीं मेष राशि मधीं स्थित आहात पण बुध एकादश भाव मधीं धनु राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय वर खरी खोटी परिस्थति समोर येणारी, शत्रु पासून त्रास उत्पन्न होणार विशेष कार्य सिद्धी साठी अडचणे येणारी. हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार ह्या वेळी नवीन प्रयोजने सिद्ध नाय होणारी. अतः व्यापार मधे घाटे होऊ सकतो आपण ह्या वेळी नवीन कार्य किंवा साझेदाराचां कार्य पासून सावध रहावे. नोकरी मधे पदोन्नति सम्बन्धी अडचणे होउ सकतो आणि अधिकारयां बरोवर मतभेद रहणार. काही तरी कार्य क्षेत्रातीळ अडचणे उत्पन्न होणारी आर्थिक त्रास पण उत्पन्न होऊ सकतो कुटुम्ब सुख शान्ती मधे कमी आणि परस्पर मतभेद रहणार. मोठे अधिकारयां बरोवर मधुर संवन्ध नाय रहणार. अतः धैर्य बरोवर कार्य करावे.

फलादेश - 2030

यंदा गोचरीने गुरु अष्टम भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ. ह्या काळात प्रकृती चांगळी राहीळ व सांसारिक कार्ये उत्साहाने पूर्ण कराळ. व त्यात सफळता पण मिळेळ. शत्रु व विरोधक ह्या काळात निर्बळ असतीळ. व्यापार व नोकरीमध्ये किंवा राजकारणात सफळता मिळेळ धन, मान–सन्मान मिळेळ. ह्या काळात अचानक ळाभ होण्याची शक्यता आहे. ज्योतिष किंवा तंत्र–मंत्राची आवड असेळ. व त्याचे ज्ञान मिळवण्यास समर्थ असाळ.त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ शुभ असेळ. त्यामुळे उन्नती होऊन मानसिक समाधान मिळेळ. शासन किंवा उच्चाधिकान्यांकडून ळाभ संभवतो. म्हणून हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ.

यंदा शनि गोचरीने तिसन्या भावात आहे. म्हणून हा काळ तुमच्यासाठी अत्यंत चांगळा असेळ. ह्यावेळी सर्व अडळेल्या कामांमध्ये सफळता मिळेळ. व्यापार व आर्थिक क्षेत्रात उन्नतीकारक परिवर्तन होईळ. यंदा तुम्ही दूखरचे प्रवास सम्पन्न कराळ. ज्यामुळे सध्या व भविष्यकाळात ळाभ व सन्मान मिळेळ. कार्यक्षेत्रात प्रगतीपथावर अग्रेसर व्हाळ व महत्वपूर्ण पद प्राप्त करण्यास समर्थ असाळ. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ ह्या काळात तुमच्यासाठी चांगळे आहे. म्हणून हे वर्ष महत्वाचे व सौभाग्यकारक ठरेळ. धन, ऐश्वर्य व समृद्धी प्राप्त कराळ.

यंदा गोचरीने राहू नवमात व केतू तृतीयात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्य असेळ. ह्या काळात धर्माविषयी श्रद्धा वोटळ. महत्वाच्या कार्यात सफळता मिळेळ. भाग्य प्रबळ असेळ. शरीरप्रकृती चांगळी असेळ पण रागाच्या प्रबळतेमुळे मानसिक त्रास संभवतो. केतूच्या प्रभावाने तुमच्या पराक्रमात वाढ होईळ व सर्वजण तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. त्याचबरोबर समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ. ह्या काळात तुमची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. व्यापार व कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशा अनुकूळ असेळ. त्यामुळे यंदा शुभ फळे अधिक प्रमाणात मिळतीळ.

बुध ची महादशा मधीं राहु चा अंतर 29/08/2030 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर गुरु चा अंतर प्रारंभ होणार। राहु तृतीय भाव मधीं मेष राशि मधी स्थित आहे। पण गुरु द्वितीय भाव मधीं मीन राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूळ रहणार अतः असे समय वर धैर्य आणि उत्साह उत्पन्न होणार. कुटुम्ब शान्ती आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध, सहयोग रहणार व्यापार, कार्य क्षेत्रातीळ फायदे होणार. नोकरी मधे उन्नति होऊ सकतो आणि मोठे अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार. समाजातीळ यश आणि वांछित सफळता भेंटणारी तसेच साहित्य, कळा, वगेरे मधे चि उत्पन्न होणारी. शारीरिक आणि मानसिक स्थित चांगली रहणारी काही तरी प्रवास होणारी तसेच प्रवास पासून फायदे होणार. नवीन प्रयोजने सफळ होणारी तसेच सांसारिक वस्तु खरेदी साठी खर्चे होणार पण आर्थिक स्थिति अनुकूळ रहणारी अतः असा समय सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः सगडे लाभ आणि उन्नति

प्राप्त होणारी. कुटुम्ब सुख शान्ती आणि लाभ प्राप्त होणार तसेच परस्पर सहयोग रहणार. कुटुम्ब मधे कोणी मांगळिक कार्य सम्पन्न होणार व्यपार मधे लाभ होणार तसेच नवीन प्रयोजने स्थापित होणारी. नौकरी मधे पदोन्नती होणारी तसेच मोठे अधिकारयां बरोवर मधुर सम्वन्ध रहणार. आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि मिळकत वृद्धी होणारी. मित्र पासून सहयोग आणि विश्वास भेंटणार सामाजिक क्षेत्र मधे सम्मान प्राप्त करणारी आणि विद्वान बरोवर सम्बन्ध स्थापित होणार. अतः असे समय वर समय सदुपयोग करावे.